प्रातः क्लास 16-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं अभी हमको वापस जाना है। आगे बिलकुल नहीं जानते थे। बाप आत्माओं को समझाते हैं। इनका समझाना भी ड्रामा प्लैन अनुसार अभी राईट देखने में आता है। और कोई समझा न सके। अभी हमको वापस जाना है। अपवित्र तो वापस जा नहीं सकते। यह ज्ञान भी इस समय ही मिल सकता है। एक बाप ही आकर देते हैं। पहले तो यह याद करना है हमको वापस जाना है। बाबा को बुलाते रहते थे मालूम कुछ भी नहीं था। अचानक जब समय आया तो बाबा भी आ गया और नई2 बातें समझाते रहते हैं। बच्चे जानते हैं हमको अभी वापस जाना है। बाप कहते हैं तुम पतित तो हो ही। अभी पावन होना है। नहीं तो सज़ा भी खानी पड़ेगी। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। इतना फर्क हो जाता है। जैसे यहां राव और रंक वैसे वहां भी राव और रंक बनते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। अभी बाप कहते हैं वापस जाना है। आत्मा को पावन जरूर बनना है। तुम खुद जानते हो पतित हैं तब तो पुकारते हैं। यह भी तुमको अभी समझाते हैं। अज्ञान काल में यह बुधि में नहीं हरता। बाप कहते हैं आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उनको सतोप्रधान बनाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनती है वह भी सीढी मे समझाया है। उनके साथ फिर दैवी-गुण भी धारण करनी है। यह है बेहद का स्कूल। स्कूल में रजिस्टर रखते हैं ना। गुड कान्डेक्ट, बेटर कान्डेक्ट, बेस्ट कान्डेक्ट। फर्क तो है ना। जो सर्विस एबुल बच्चे हैं वह बहुत मीठे हैं। अच्छे2 कान्डेक्ट को पाते रहते हैं। कम कान्डेक्ट है तो इतने उछल नहीं खाते हैं। सारा मदार है पढ़ाई और योग पर। और दैवी-गुणों पर भी है। बच्चे समझते हैं बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। पढ़ाते तो इनको भी है ना। परन्तु यह हिर जाते हैं तो झट बेहद में आ जाते हैं। बाबा ही बोलने शुरू कर देते हैं। है तो दोनो इकट्ठे। बीच में कब वह, कब यह बात करते हैं। समझ जाते हैं यह तो बाबा को समझानी है। इनको भी प्रैक्टीस हो जाती है। यह भी बच्चे जानते हैं आगे हम शुद्र वर्ण के थे। अभी ब्राह्मण वर्ण के हैं। प्रजापिता ब्रहमा के बच्चे हो गये। हम ब्राह्मण हैं यह भी ब्राह्मणों को भूल जाता है। यह तो याद रहना चाहिए ना। जब कि बाप को याद करते हो तो ब्रहमा को भी याद करना पड़े। हम ब्राह्मण कुल के हैं तो नशा भी चढ़े भी ना। भूल जाते हैं तो यह नशा भी नहीं चढ़ता। हम ब्राह्मण-कुल के हैं फिर हम देवता कुल के बनेंगे। ब्राह्मण कुल किसने बनाया? ब्रहमा द्वारा मैं तुमको ब्राह्मणकुल में ले आता हूं। ब्राह्मणों का। यह डिनायस्टी नहीं है छोटा सा कुल है। अपने को ब्राह्मण समझेंगे तो देवता भी बनेंगे। अच्छा अपने धंधे आद में लगने से बातें भूल जाते हैं, ब्राह्मणपना भी भूल जाता है। अच्छा उन से फारग हुये तो फिर पुरुषार्थ करना चाहिए। कोई2 धंधा ऐसा होता है जिसमें जास्ती ध्यान देना पड़ता है। काम पूरा फिर अपनी बात। जैसे बाबा अपना मिशाल बताते हैं। हम नारायण का भक्त था। बड़ा ही प्यार था उन पर। याद तो करना ही था जरूर। बहुत ही लव था। इस समय तो शिव बाबा से लव हुआ है ना। ना० के साथ बहुत लव था। फोटो पाकेट में भी पड़ा रहता था। बिस्तरे में भी रखा था। मुरादी के खाने में भी रखा था। पहले मूर्ति देख पीछे काम शुरू करेंगे। ड्रीम हेर पड़ गई। तो इसमें भी बाप समझाते हैं कोई2 ऐसा काम होता है जिसमें तुम बिज़ी रहते हो। अच्छा फ्री हुये फिर याद में बैठ जाओ। अभी भक्ति की तो बात ही नहीं। तुम्हारे पास वैज तो बहुत अच्छा है। इनको देखो। ल०ना० का चित्र भी है, त्रिमूर्ति भी है। बाबा हमको यह बनाते हैं। बस यही मन्मनाभव है। कोई को टैव पड़ जाती है कोई को नहीं पड़ती है। भक्ति-मार्ग तो पूरा हुआ। अभी बाप को याद करना है। बाप को जाना भी है। बाबा हमको बेहद का वर्सा देते हैं। खुशी होती है ना। किसको बहुत अच्छी लगन लग जाती है किसको कम। बहुत इजी है। मन्मनाभव। गीता में भी आद में और अन्त में यह मन्मनाभव अक्षर है। यह वही गीता का एपीसुड है। सिर्फ गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। भक्ति मार्ग में जो भी दृष्टान्त आद देते हैं वह सभी हैं इस समय की। भक्ति-मार्ग में कोई ऐसे थोड़े ही कहते मन्मनाभव। शरीर का भान छोड़ अपने को आत्मा समझो। वह तो जानते ही नहीं। यहां तुम बच्चों को शिक्षा

मिलती है। यह शिक्षा अभी ही बाप देते हैं। यह निश्चय है देवी-देवता धर्म की स्थापना हमारे द्वारा हो रही है। राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें कोई लड़ाई झगड़े की बात नहीं। पवित्रता सिखलाते हैं जो फिर आधा कल्प कायम रहेगी। वहां तो रावण-राज्य ही नहीं। विकार की बात ही नहीं। विकारों पर तुम जीत पहनेतेरे हो। यह भी जानते हो हू बहू कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन हुई थी अभी कर रहे हैं। हमारे लिए यह सारी दुनिया खत्म होनी है। ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। वह है ही नई दुनिया। वहां तो सोना ही सोना होगा। जो बना था वह फिर बनेगा। इसमें सुनने की बात ही नहीं। ड्रामा है ना। माया गफलन्दर का खेल भी दिखाते हैं ध्यान में सोने की ईंटें देखी। तुम भी बैकुण्ठ में सोने के महल देख आते हो ना। वहां ही चीजें यहां तो ले आ नहीं सकेंगे। यह है सा0। भक्ति-मार्ग में तो इन बातों को कुछ भी समझते नहीं। तो अभी बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे मैं आया हूं तुमको ले जाने लिए। तुम्हारे बिगर हमको भी जैसे बेआरामी होती है। जब वह समय होता है तो हमको बेआरामी हो जाती है। बस अभी हम जाऊं। बहुत पुकारते हैं। तरस पड़ता है। बच्चे बहुत दुःखी हुये हैं अभी जाऊं। ड्रामा का जब समय होता है तब ही खयाल होता है बस जाऊं। वह लोग तो नाटक दिखाते हैं विष्णु-अवतरण का। अभी विष्णु का अवतरण तो होता ही नहीं। नाटक में दिखाते हैं गरुड़ परसवार होकर आया। ल0ना0 गरुड़ पर थोड़े ही बैठते हैं। पक्षियों पर सवारी होती है क्या। दिन प्रति दिन मनुष्यों की बुधि एकदम खत्म होती जाती है। कुछ भी समझते नहीं। आत्मा पतित बनी है ना। तो अभी कहते हैं बाबा पावन बनाओ। तो रामराज्य हो। राम को कोई जानते ही नहीं। शिव की पूजा जो करने जाते हैं उनको राम नहीं कहेंगे। शिव बाबा कहना बहुत शोभता है। भक्ति-मार्ग में कोई रस नहीं आता। तुमको अभी रस आता है। बाप खुद कहते हैं मीठे2 बच्चों मैं तुमको घर ले जाने आया हूं। फिर वहां से तुम आपे ही चले जावेंगे सुख-धाम। वहां तुम्हारा साथी नहीं बनूंगा। अपनी अवस्था अनुसार तुम्हारी आत्मा चली जावेगी। जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी। अर्थात गर्भ में जन्म लेगी। वहां गर्भ-जेल नहीं होता। दिखाते हैं ना सागर में पिपर के पत्ते . . सागर की बात नहीं। है गर्भ। वहां बड़े हीआराम से रहते हैं। बच्चा जब बड़ा होता है, खाने-पीने लायक होता है तोफिर मां जो खाना खाती है उसका जो तत्त बनता है वहनाभी से बच्चा को मिलता है। फिर बाद में जब बच्चा बाहर निकलता है तो नाभी को काट देते हैं। फिर जो चीज़ अन्दर मिलती थी वह अ बाहर से मिलने लगती है। यह सभी रचना रची हुई है। बाप तो कहते हैं मैं गर्भ में जाता ही नहीं हूं। मैं तो इन में आकरप्रवेश करताहूं। मेरे बदलो कृष्ण को बच्चा समझ दिल को बहलाते हैं। समझते हैं कृष्ण ने ज्ञान दिया। इस-लिए उनको प्यार भी करते हैं। मैं तो तुमको साथ ले जाये फिर भेज देता हूं। मेरा पार्ट पूरा। आधा कल्प कोई पार्ट ही नहीं। फिर भक्ति-मार्ग बाद पार्ट शुरु होता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। अभी तुम बच्चों को तो यह समझना औरसमझाना बहुत सहज है। दूसरों कोसुनावेंगे तो भी खुशी भी होंगी। और फिर पद भी पावेंगे। यहां बैठ सुनते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। बाहर जाने से फिर भूल जाते हैं। जैसे जेल बर्ड्स होते हैं ना। ड़ी2 कोई न कोई हरकत कर के जेल में चले जावेंगे। फिर उनकी सज़ा भी बढ़ती जाती है। तुम्हारा भी ऐसा हाल होता है। इसलिए कहा जाता है गर्भ जेल में भी इनजाम कर आते हैं फिर वहां की वहां ही रहीं। यह भी सभीबातें बनाई हुई है। तो मनुष्य कोई पाप न करे। यह भी समझाया है आत्मा संस्कार ले जाती है। शास्त्रों के संस्कार ले जाते हैं तो पंडित बन जाते हैं। मनुष्य समझते हैं निर्लेप है। अभी निर्लेप तो हो न सके। अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाते हैं तब ही कर्मों का भोग होता है। अभी तुम प्युर संस्कार ले जाते हो। पूरा पद कर वह फिर स्टेज पाते हैं। बाबातो सारे झुण्डों को ले जाते हैं। जैसे मकरों का झुण्ड होता है ना। सारे ट्रेन को ही खड़ा कर देते हैं। आत्मा भी बहुत छोटी है। तो हम आत्माओं के झुण्डों को ले जाता हूं। थोड़े रहते हैं। बाकी बाद में आते-जाते हैं। रहते भी वहां हैं जिनको पिछाड़ी में आना है। भाला है ना।

नम्बरवार बनते आवेंगे। बाकी बचत ब्रेक पिछाड़ी जावेंगे। फिर आवेंगे भीपिछाड़ी में। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कोई को तो धारणा होती है। कोई की बुधि में बैठता ही नहीं। अवस्थाऐसी तो फिर पद भी ऐसा हो जाता। तुम बच्चों को कल्याणकारी रहम दिल बनना है। ड्रामा हो ऐसा बना हुआ है। दोष किसको नहीं दे सकते। कल्प पहले जितनी पढ़ाई की होंगी उतनी ही होंगी। जास्ती होंगा ही नहीं कितना भीपुरुषार्थ करावेंगे। कोई फर्क नहीं पड़ेगा। फर्क जब पड़े जब किसको सुनावेंगे। नम्बरवार तो है ही। कहां राव कहां रंक। यह अविनाशी ज्ञान रत्न राव बनाती है, अगर धारणा नहीं करते हैं तो रंक बन जाते हैं। यह बेहद का स्कूल है। फर्स्ट सेकण्ड थर्ड है। भक्ति में पढ़ाई की बात नहीं। वह तो है ही उतरने की बात। शैतानिक बहुत है। झांझ बजाते, स्तुति करते, अभी वह कुछ भी बात नहीं। फा तो शान्ति में रहना है। भजन आद कुछ नहीं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। तुम आधा कल्प भक्ति करते आये हो। भक्ति का कितना शो है। सभी का अपना पार्ट है। कोई गिरता है कोई चढ़ता है। कोई की धारणा अच्छी होंगी कोई की कम। तदबीर तो बाप एक रस कराते हैं। बाप पढ़ाते तो एक रस हैं ना। बाप है एक। बाकी तुम हो मानिटर। कोई बड़े आदमी होते हैं नहीं आते हैं, बोलो हम घर में जाकर पढ़ावें। उन्हों को तो अपना अहंकार रहता है। एक को हाथ करने से औरों पर असर होंगा। परन्तु वह भी अगर किसको कहेंगे तो सभी कहेंगे अरे तुम कहां जाकर फंसे हो। ब्रह्मा कुमारियों का संग लगा है। इसलिए सिर्फ अच्छा2 कहते हैं। अभीदेखो खुद मिनिस्टर तुम्हारे पास आता है उनको तुम बता सकते हो हमको फलाने चीज नहीं मिलती है। हम इतना खर्चा करते हैं। कोई से भीख नहीं लेते। हमारे पास लाखों रुपया पोड़े हो खो है। जो 4रुपये किलो हम लेंगे। गुर खाना पड़ता है। हम भारत को हेविन बनाते हैं। हमको मदद चाहिए। आप मिनिस्टर हो। परमीट दे दो। बोलेंगे हमारे हाथ में नहीं है। दिल को खावेंगे। सभी समझेंगे उनको जादू लगा है। चार्ज वाले भी कोई कोई कैसे होते हैं। उस समय तीरलगा तो काम निकालना चाहिए। ऐसे भी न समझे कि हम से काम लेते हैं। युक्ति से सभी काम करना होता है। कहां2 जो काम बड़ा आफिसर न करे छोटा भी कर लेते हैं। बच्चों में योग की पावर बहुत अच्छी चाहिए। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। खुमिजाज और योगी होंगा तो काम निकालेंगे। नम्बरवार तो है ना। सारी राजधानी बननी है। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चो धारणा तो बिलकुल ही सहज है। बाबा को जितना याद करेंगे उतनालव रहेंगा। कशिश होंगी ना। सुई साफ है तो चकमक तरफ खेंचेंगी। कट लगी हुई होंगी तो खेंचेंगी नहीं। यह भी एसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेंगी। बाप दादा द्वारा समझाते हैं। गायन भी है बलिहारी गुरु आप नो जिन गोबिन्द दियो बताये। इसलिए कहते हैं गुरु ब्रह्मा... वह सगाई कराने वालेगुरु मनुष्य हो जाते हैं। यह तो बाप से सगाई करानी है। गोबिन्द अपने साथ यहां आकर सगाई कराते हैं। तब बाबा कहते हैं मामेकं याद करो। ब्रह्मा को याद नहीं करना है। तुम्हारीहमारी साथ सगाई है। ब्रह्मा के साथ सगाई नहीं है। शिव बाबा से सगाई करेंगे तो याद भी उनको करेंगे ना। दलाल की चित्र की दरकार ही नहीं। सगाई पक्की हो गई फिर एक को ही याद करना है। और फिर इन द्वारा कराते हैं। तो उनको भी दलाली मिलती है। सगाई का भी मिलता है। दूसरा फिर इनमें प्रवेश करते हैं। लोन लेते हैं तो वह भी कशिश करते हैं। तब बच्चों को भी ऐसे ही समझाते हैं। जितना तुम बहुतों का कल्याण करेंगे उतना तुमको उजुरा मिलेंगा। यह है ज्ञान कीबातें। बहुतों का कल्याण करो तो बहुतों की आशीर्वादमिल जाती है। पैसे की दरकार ही नहीं। भमा थी कुछ भीधन नहीं था। कितना बहुतों का कल्याण किया। ड्रामा में पार्ट था। कोई धनवान देते हैं म्युजियम आद निकालते हैं तो बहुतों की आर्यीवाद मिलती है। अच्छा शाहुकार पद मिल जाता है। वह भी कम थोड़े ही है। बाबाको सभी का अनुभव है। शाहुकारों पास भी दास-दासियां बहुत होते हैं। राजाओं पास इतना धन नहीं होंगा जितना आज में शाहुकारों पास धन होता है। फिर उनहों से लोन भी लेते हैं। शाहुकार

इत्यादि

प्रजा बने वह भी अच्छा है। शाहुकार भी बनना चाहिए ना। वह भी अवसर कर के गरीब ही शाहुकार बनते हैं। शाहुकारों में हिम्मत कहां है। इसने तो फ्ट से सभी कुछ दे दिया। पाकिस्तान में गये। बच्चे तो सभी आ गये वहां तुम देखो कैसे रहे। बड़े2 मकान थे। मोटरें थी। कितना खर्चा होता था।

तो अभी बाप कहते हैं एक को याद करो और आत्म-अभिमानी बनो। कितना नशा चढना चाहिए भगवान हमको पढ़ा रहे हैं। बाप तुमको कितना अथाह ख़ज़ाना देते हैं। तुम धारण नहीं कर सकते हो। लेने का दम ही नहीं है। मत पर नहीं चलते हो। बाप तो कहते है झोली भर लो। शंकर के आगे जा कर कहते है झोली भर दो। अभी वहां झोली कहां से आवेगी। यहां यहां बहुतों की झोली भरती है। बाहर जाने से ही झोली वह जाती है। धारणा नहीं होती। बापकहते हैं मैं तुमको बहुत भारी ख़ज़ाना देता हूं। ज्ञान सागर तुमको रत्नों की थालियां भर कर देते हैं। नम्बरवार जो अपनी झोली भरते हैं वह फिर दान भी करते हैं। सभीको प्यारे लगते हैं। होगा ही नहीं तो फिर देंगे क्या। है तो देंगे जरूर। राजधानी स्थापन होती है यह किसकी भी बुधि में नहीं होगा। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी कल्प2 स्थापन करते हैं। इस 84 के चक्र को अच्छीरीत समझना है। बाकी मेहनत है योग की। योग भी नहीं पढ़ाई भी नहीं तो पद भी बहुत कम मिलेगा। तुम अभी युध के मैदान में हो। माया पर जीत पाने लड़ते हो। नापास हुये तो चन्द्रवंशी में चले जावेंगे। यह सभी समझने की बातें हैं ना। यह रथ तो बहुत अनुभवी है इसने बहुत कुछ देखा है। बावरे का छोरा था। लौकिक बाप को 15-20 रुपया वेतन मिलता था। पारलौकिक बाप तो देखो ? यह खेल बड़ा मजे का है। गांवरों का भी बहुत अनुभव देखा। बहुत प्यार करते थे सभी। फिर चढ़ता गया। राजाओं, वायसराय, कमान्डर ईन चीफ आद सभी से बात-चीत करता था। बड़ी खुशी होती थी। सभी का बहुत प्यार था। हम भीनशे से बात करता था। तुम तो गवर्मेन्ट के नौकर हो। हम तो मरचेन्ट-प्रिन्स हूं। हमको परमिट दो। हमको कोई भी आर्पे से मिलनेरोके नहीं। झट पर्चे दे देते थे। परमिट दिखाई और झट अन्दर चले गये। बाबा को रथ भी बहुत अनुभवी मिला है। अच्छा मीठे2 सिकील थे बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुड मार्निंग औरनमस्ते।

बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा आप हमें कितना वर्षा देते हो। उठते-बैठते सारा दिनबुधि में यह रहे तब ही धारणा हो सके। योग है मुख्य। योग से ही तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। नालेज अनुसार तुम राज्य करते हो। वह पैसे आद तो सभी मिट्टी मे मिल जानी है। यह तो साथ चलना है। सेन्सीबुल बच्चे जो होंगे वह तोकहेंगे हम बाबा सेपूरा वर्षा लेंगे। एकदम चटक पड़ेंगे। तकदीर में न है तो फिर पाई पैसे का पद पा लेंगे। बाबा ने देखाहम 2। जन्म लिये मालिक बनते हैं विष्णुपूरी का। तो सोचा यह तो गधाई है। रावण राज्य में है ही गधाई। देही-अभिमानी बनने में मेहनत है। बाप से वर्षा जरूर चाहिए। पुरुषार्थ अनुसार राज-भाग लिया। फिर गमाया। अभी फिर बाप कहते हैं मेरे मत पर चलो। माया भीनाक से ऐसा पकड़ लेती है जोपता ही नहीं पड़ता। एकदम माथाही मुड़ लेती है। काला मूंह कियागोया माया मुंह लिया।

डाक्टरस, सर्जन आद को भी तुम समझा सकते हो। यह सजीवनी बूटी ऐसी है जो फिर कब 2। जन्म लिए बिमार नहीं पड़ेंगे। परन्तु वह हिम्मत युक्ति चाहिए बात करने की। एडयुकेशन मिनिस्टर की कान्फ्रेन्स करनी चाहिए आओ तो हम तुमको बतावें इस समय मनुष्यों के कितने आसुरी कैरेक्टर्स हैं। सो दैवी कैसे बनें सकते हैं हम बतावें। फूड मिनिस्टर को भी समझा सकते हो हम ऐसी राजधानी स्थापन करते हैं जहां कब अकाल नहीं पड़ेगा। इस लड़ाई के बाद एक धर्म का राज्य हो जावेगा। हम स्वर्ग स्थापन कररहे हैं। मनुष्यों को समझने में भी टाईम लगता है। अच्छा।

हलो सर्व सेन्टर्स निवासी, मधुवन निवासियों की मधुर याद प्यारले बाप-दादा सहित स्वीकार करना जी। बड़ा ही उमंग और उल्लास के साथ संगम के सुहावने समय का लाभ ले रहे होंगे। अच्छा अभी विदाई।

-::शिव बाबा याद है?::-